पाठ 7. नया जीवन

पाठ का परिचय

सेठ श्यामलाल बहुत धनवान थे। वह अपना जन्मदिन बहुत धूमधाम से मनाते थे। एक वर्ष अपने जन्मदिन के उत्सव के बाद वह अपने कमरे में बैठे ही थे कि उन्हें पर्दे के पीछे से किसी की परछाईं दिखाई दी। सेठ जी के आवाज़ देने पर दयाराम उस पर्दे से बाहर आया और उसने बताया कि उसकी पत्नी बीमार है और उसके बच्चों ने दो दिन से कुछ नहीं खाया इसलिए वह पकवानों की सुगंध पाकर यहाँ चोरी करने चला आया। सेठ श्यामलाल दयालु थे। वे दयाराम की मज़बूरी को समझ गए। उन्होंने दयाराम को भोजन और थोड़े पैसे दिए और कहा कि इन पैसों से वह नया धंधा शुरू करे। कुछ महीनों बाद जब सेठ श्यामलाल अपने बगीचे में बैठे अखबार पढ़ रहे थे तो दयाराम मिठाई का डिब्बा लेकर आया। सेठ जी तुरंत पहचान गए कि वह दयाराम है जिसकी उन्होंने मदद की थी। अब दयाराम के पास एक दुकान थी और वह ईमानदारी का जीवन जी रहा था। वह सेठ श्यामलाल को धन्यवाद देने आया था क्योंकि उन्होंने ही उसे एक नया जीवन दिया था।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

जहाँ तक संभव हो, गरीबों की मदद करनी चाहिए। यदि गलत राह पर जाने वाले किसी व्यक्ति को एक बार रोककर सही राह दिखाई जाए तो वह अवश्य ही ईमानदारी की राह पर चलना सीख लेगा। इस तरह दुनिया से हम बुराई को दूर कर सकते हैं।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका पूरी कहानी का आदर्श वाचन करें। बच्चे पुस्तक पर सही स्थान पर उँगली रखते हुए सुनें। बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ। शुद्ध उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से प्रश्न करें –

- यदि तुम्हारा कोई दोस्त गलत काम करता हो तो तुम उसकी सहायता कैसे करोगे?
- अगर वह तुम्हारी पेंसिल चुरा लेता है तो तुम उसके साथ कैसा व्यवहार करोगे?
- क्या अच्छा व्यवहार करने से व्यक्ति अच्छा बन सकता है?

अध्यापक/अध्यापिका यदि ऐसी किसी घटना के बारे में जानते हों तो बच्चों को बताएँ। प्रश्न-उत्तर पर चर्चा करने तथा शुद्ध भाषा में उत्तर लिखने से बच्चों की भाषा-संबंधी तथा तर्क-वितर्क संबंधी बहुविध बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।